Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संत तुकाराम के अभंगो की प्रासंगिकता

डॉ. शंकर रामभाऊ पजई
सहयोगी प्राध्यापक
तोष्णीवाल महाविद्यालय, सेनगाव
जि. हिंगोली (महाराष्ट्र)
Email-pajaishankar@gmail.com
Mob. 9850265069

प्रस्तावना:

महाराष्ट्र की भूमि को संतो की भूमि माना जाता है | इस भूमि में संत नामदेव, निवृतीनाथ, ज्ञानदेव, सोपानदेव, मुक्ताबाई, संत एकनाथ, गोरा कुम्हार, सावता माली, चोखा मेला, संत सेना न्हावी, नरहरी सुनार, संत कान्होपात्रा, जनाबाई तथा संत तुकाराम प्रमुख संत रहे है | इन सब संतो ने पंढरपूर स्थित श्री विठ्ठल को अपना आराध्य मानकर उनकी भक्ति में अपने आपको डूबोया है | इन्हे वारकरी कहा जाता है और उनके सम्प्रदाय को वारकरी सम्प्रदाय में जाणा जाता है | वारकरी शब्द में वारी शब्द का अर्थ है यात्रा करना | जो पंढरपूर की वारी करता है, गले में तुलसी की माला पहनता है, मस्तक पार गोपिचंदन लागता है और नामस्मरण करता है वह वारकरी होता है | संत नामदेव श्री विठ्ठल के प्राणप्रिय भक्त रहे है | ' ज्ञानदेवे रचिला पाया तुका झाला से कळस' वारकरी सम्प्रदाय को 'भागवत धर्म' तथा वैष्णव संप्रदाय ने से भी जाना जाता है जिसका आरंभ संत ज्ञानेश्वर ने किया और उसे चरमसिमा तक पहुँचाने का कार्य संत तुकाराम ने किया |

संत तुकाराम का पुरा नाम तुकाराम बोल्होबा आंबिले(मोरे) है | उनका जन्म माघ शु. पंचमी शके १५२८ मतलब २२ जनवरी १६०८ को देहु नामक महाराष्ट्र के गांव में हुआ | माता का नाम कनकाई तथा पिता का नाम बोल्होबा है | पत्नी का नाम जिजाबाई जिसे प्यार से वे आवडी कहते थे | बाबाजी नाम के गुरु से उन्हे दिक्षा मिली ऐसा वे स्वयं अपने अभंग से कहते है | उन्होने ४००० अभंगो की रचना की है जिसे 'तुकाराम गाथा' कहा जाता है | पंढरपूर के श्री विठ्ठल को वे अपना आराध्य मानते हुए कहते है –

सुंदर तें ध्यान उभें विटेवरी | कर कटावरी ठेवू नियां ||
तुलसीहार गळां कासे पितांबर | आवडे निरंतर हेचि ध्यान ||
मकरकुंडले तळपती श्रवणी | कंही कौस्तुभमणि विराजति |
तुका म्हणे माझे हेचि सर्व सुख | पाहीन श्रीमुख आवडीने |

मेरा आराध्य श्री विठ्ठल है जो विट पर खडा है हात कमर पर रखे हुए है, गले में तुलसीहार तथा पितांबर पहना हुआ है | उसके कानो में कुंडल है, कंठ पर कौस्तुभ मणी है और उन्हे देखना ही मेरा सर्वसुख है |

काकड आरती मतलब सुबह चार बजे मंदिर में जाकर श्री विठ्ठल को जगाना है | उन्हे जगाकर समस्त विश्वपिडा को दुर करना है | क्योंकि समस्त ब्रम्हांड का वह धनि है | जिव जंतु मानव सभी का रक्षण करने वाला वही है इसलिय तुकाराम महाराज कहते है-

कां हो तुम्ही निश्चिंतीने निजलाती हरी |
मानिले हें सुख आम्ही वाचुं कैशापरी || १
उठा सावध व्हावे क्षेम सकळा दयावे |
जया जी वासना तयां तैसे पुरवावें || २
जन्मोजन्मी सांभाळिले क्षमा करा अन्याय |
कृपा करी देवा आंम्हा तुंचि बापमाय || ३
तुका म्हणे करा वडील पण दानासी |
जेणें सूच्य होय सकळ हे जनासी || ४

या फिर

माझे चित्त तुझे पायीं | राहे ऐसे करी कांही
धरोनियां बाहि | भव हा तारी दातारां ||
चतुरा तूं शिरोमणी | गुणलावण्याची खाणी
मुकुट सकळां मणी | धन्य तुंचि विठोबा ||
करीया तिमीराचा नाश | उदय होऊनि प्रकाश
तोडी आशा पाश | करी वास ह्दयीं ||
पाहें गुंतलो नेणता | माझी असो तुंम्हा चिंता
तुका ठेवी माया | पायीं आता राखावे ||

काकडा आरती में संत तुकाराम श्री विठ्ठल से जागने की बिनती करते है और जिसे जो चाहिए वह सब कुछ देवो | आप ही हमारे माँ बाप है चौराशी जन्मो से हमे सम्हाल रहे है | मेरे तिमीर का नाश करो और हमे प्रकाश कि और ले चलो | मोह, माया, लोभ, मत्सर, काम तथा क्रोध के पाशों से हमें दुर करो और हमारे ह्दय में वास करों मै आपके चरण पर मथ्या टेकता हुँ हमारा रक्षण करों |

ईश्वर प्राप्ती के संदर्भ में संत तुकाराम महाराज कहते है –

नामसंकीर्तन साधन पैं सोपे | जळतील पापे जन्मांतरीची ||
नलगती सायास जावें वनांतरा | सुच्चे येतो घरा नारायण ||
ठायींच बैसोनी करा एक चित्त | आवडी आनंत आळवावा ||
रामकृष्णहरि विठ्ठल केशवा | मंत्र हा जपावा सर्वकाळ ||
यावीण असता आणीक साधन | वाहतसे आण विठोबाची ||
तुका म्हणे सोपे आहे सर्वाहूनि | शहाणा तो धणी घेतो येथे |

संत कबीर के समान संत तुकाराम सुमिरण को महत्व देते है | 'रामकृष्णहरि विठ्ठल केशवा' इस मंत्र का जाप करो | मी शपथपूर्वक कहता हूँ इससे आसान भगवान प्राप्ती का दुसरा कोई मार्ग नही है | मै तनमन से श्री विठ्ठल का बना हुँ | जिस तरह कबीर अपने आपको ईश्वर की प्रियसी मानते है वैसे ही संत तुकाराम केवल और केवल श्री विठ्ठल की भक्ति में रंगते हुए कहते है-

पतिव्रत्ता नेणें आणिकांची स्तुती | सर्वभावें पति ध्यानींमनी ||
तैसे माझे मन एकविध झालें | नावडे विठ्ठलेविणे दुजे ||
सूर्यविकासिनी नेधे चंद्रकळा | गाय ते कोकिळां वसंतेसी
तुका म्हणे बाळ मातेपुढे नाचे | बोल आणिकांचे नावडती ||

या फिर

आणिकांची स्तुति आम्हां ब्रम्हहत्या | एकावांचुनि त्या पांडुरंगा
आंम्हा विष्णुदासा एकविध भाव | न म्हणों या देव आणिकांसी
शतखंड माझी होईल रसना | जरी या वचना पालटेल ||
तुका म्हणे मज आणिल संकल्पे | अवघीच पापें घडतील ||

जिस प्रकार पतिव्रत्ता नारी अपने पति के सिवा अन्य पुरुषोंकी स्तुति नहि सह सकती है वैसे हम श्री विठ्ठल के सिवा अन्य किसी की भक्ति नहि करना चाहते है | हम केवळ एक ही ईश्वर मानते है | अन्य देविदेवताओंकी स्तुति करणा हमारे लिय ब्रम्हहत्या के समान है | यह मेरा वचन है अगर मै अन्य किसी के शरण जाऊँ तो मेरी जिव्हा के सौ तुकडे हो जायेंगे |

संत तुकाराम साहूकार थे, अकाल में उन्होने सब कुछधन, धान्य बाट दिया और भगवान से कहा अच्छा हो गया की मेरे पास कुछ नाही रहा नही तो मुझे भगवंत भक्ति का सौभाग्य नही मिलता

अब तो हमारे घर शब्दों का ही धन है | शब्द ही रत्न है और यही शब्द हम जनता में बाटेंगे और सभी को भगवंत भक्ति को लगायेंगे | हम संत लोग जिस प्रकार छोटे बच्चे के कारण पंत हाथ में पाटी पकडते है वैसे है-

अर्भकाचेसाठी | पंते हातीं धरिली पाटी ||
तैसे संत जगीं | क्रिया करुनी दाविती अंगी ||
बाळकाचे चाली | माता जाणूनि पाऊल घाली ||
तुका म्हणे नाव जनासाठी उदकी ठाव ||

संत माँ के समान होते है | उनमें विश्वकल्याण की भावना होती है जैसे जगाच्या कल्याण संताच्या विभूती देह कष्टविटी पर उपकारे परोपकार ही संत का गहिणा है | संतो की सहज बात ही उपदेश होती है | संतों की संगती के लिय प्रयास करना पडता है | जब संत मिल जाते है तो भाग्योदय होता है |

भक्त ऐसे जाणां जे देही उदास | गेले आशापाश निवारुनि
विषय तो त्यांचा झाला नारायण | नावडे धनजन माता पिता |
निर्वाणी गोविंद असे मागे पुढें | काहीच साकडे पडों नेदी |
तुका म्हणे सत्य कर्मा व्हावें साह्य | घातलिया भय नरक जाने

भक्तों में देह के प्रति आसक्ति नाही होनी चाहिए | काम, क्रोध नष्ट होने चीहिए, धन, जन, माता-पिता ये सब सुख के साथी मानकर चलना चाहिए तब भगवान हमें कुछ भी कम नही पडने देता | संतो की चरणरज से वासना का अंत होता है | शुद्ध बीज से अच्छे फलों की निर्मिती होती है | मनुष्य ने अपना हित ध्यान में रखना चाहिए | सात्विक पुत्र घर में जन्मा तो इसका आनंद ईश्वर को होता है | संतो का घर आना दीपावली दसरे के समान मानो | पाखंडी वृत्ती के लिय आजकल सत्संग कीर्तन प्रवचन के भी लोग पैसे मांग रहे है भक्ति ढोंगी बन गई है | ऐसे लोगों को तुकाराम महाराज नें याह फटकारा है-

बुका लावुं नये माळा | माळ घालू नये गळां
तट्टा वृष भासी दाणा | तृण मागो नये जाणा ||
तुका म्हणे दृव्य होती | देती तेही नरका जाती ||

मनुष्य ने मुखी नाम हाती मोक्ष ऐसा रहना चाहिए | पवित्र अन्न का सेवन करते समय ईश्वर का चिंतन करना चाहिए | उत्तम व्यवहार से धन जोडणा चीहिए | परोपकार करना चाहिए, परनिंदा नही | परस्त्रियो को माता के समान मानना चाहिए | माया मोह से दुर जाने हेतु हरि का स्मरण करते रहना चाहिए | व्यर्थ बातों के संदर्भ में वे कहते है-

गाढवाचें ताने | पालटते क्षणक्षणों |
तैसे अधमाचे गुण | एकविध नाही मन ||
उपजतां बरें दिसे | रूप वाढतां ते नासे ||
तुका म्हणे भुंकतेवेळें | वेळ अवेळ न कळे

अधम व्यक्ति के गुण गधे के समान होते है जिसप्रकार गधे का भुंकना क्षण-क्षण में बदलता है, वैसे अधम व्यक्ति के गुण बदलते है | शुरुवाती दौर में गधे के बच्चे के समान अच्छे भी लगते है किन्तु बाद में वह निरस लगते है |

आलिया भोगासी असावे सादर | देवावरी भार घालूनिया
मग तो कृपासिंधु निवारी साकडें | थेर ते बाएडे काय रंक ||
भयाचिये पोटी दु:खाचिया राशी | शरण देवासी जाता भलें||
तुका म्हणे नव्हे काय त्या करितां | चिंतावा तो आतां विश्वंभर ||

जीवन में जो संकट आया उससे विमुख नही होना चाहिए | संकटों का सामना करना चाहिए | भय से दु:ख उत्पन्न होता है इसलिय सुख दु:ख में भगवान की शरण जाना चाहिए | हम बैकुंठ से यहाँ मनुष्य जन्म का उद्धार करने आऐ है | ऋषि मुनियों का संदेशा पहुँचाने आये है, मन विषयलोभ से दूर राखो और भक्ति का डांगोरा पिटो | मायाजाल व्यर्थ है-

नको नको मना गुंतू मायाजाळी | काळ आला जवळी ग्रासावया
काळाची ही उडी पडेल बा जेंव्हा | सोडविना तेंव्हा मायबाप
सोडविना बंधु पाठीची बहिण | शेजेची कामीन दूर राहे
सोडविना राजा देशीचा चौधरी | आणिक सोईरीं भलीं भली
तुका म्हणे तुला सोडविणा कोणी | एका चक्रपाणिवांचुनियां

मायाजाल में मनुष्य ने नही भटकना चाहिए | जब अंतिम समय आता है तब माँ, बाप, बहन, भाई, भार्या, सगे सोयरे, राजा सब दुर रहते है केवल एक ही चक्रपाणि ईश्वर मनुष्य को बचा सकता

है | अब मुझे विषयों का सुख मिठ्ठा लगता है | मेरे अंग में ब्रम्हरस भर गया है | गंगा सागर से मिलने का संगम हो गया है | मैने जो भी अट्टाहास किया है वह अंतिम क्षणों में भगवान की प्राप्ती के लिए किया है |

सकळीकांच्या पायां माझी विनवणी | मस्तक चरणी ठेवितें ||
अहो श्रोते वक्ते सकळही जन | बरें पारखून बांध गाठी
फोडिले भांडार धन्याचा हा माल | मी तवं हमाल भार वाही
तुका म्हणे चाली झाली चहुँ देशी | उतरला कसीं खरा माल ||

मेरी सभी मनुष्यों से बिनती है की इस विश्व से जो सही है उसकी ही गांठ बांधकर रखो मिठाचार को छोड दो | यह शरीर भी भगवान का दिया हुवा है हम तो भार वहन करने वाले हमाल है | हमारा माल खरा उतरणा चाहिए | निर्वाह हेतु अन्न संकलन होना चाहिए | पुण्य परउपकार है तो पाप परपीठा है | सत्य ही धर्म है | सत्संग से ही स्वर्ग सुख होगा | रोगी मनुष्य को अन्न विषतुल्य लगता है, अंधे को सारी दुनिया अंधि दिखती है इसलिय ब्रम्हरस का काढा पिना चाहिए देव, भक्ति और नाम के त्रिवेणी संगम में डूबना चाहिए |

इस प्रकार श्री विठ्ठल के निस्सीम भक्त संत तुकाराम ने अपने अभंगोद्वारा जनमानस को उपदेश दिया है | उनका साहित्य भांडार अथांग है उसमें से कुछ यहाँ प्रस्तुत करने का यह प्रयास है |

संदर्भ :

१) संत तुकाराम गाथा
२) संत साहित्य
३) महाराष्ट्राचा वारकरी सम्प्रदाय
४) वारकरी भजन संग्रह
५) ज्ञानेश्वर चरित्र – ला.रा. पांगरकर
६) संत ज्ञानेश्वर महाराज – अरुण गोखले
७) मराठी संतांचा परमार्चमार्ग – गुरुदेव रानडे